शहका

Date-

जे. एस. मिल

मिल के तीन रचनाओं को अलग-अलग देखने के बाद हम मिल की रचनाओं के समान्य विषयों के बारे जानने का प्रयास करें। मिल ने स्वयं को कभी भी उपयोगितावादी होने की बात से इनकार नहीं किया इस प्रयास में चाहे उसका सिद्धांत उसके मत से कितनी ही दूर क्यों न हो गए हो। जब उसने अधिकारों के बारे में बात की तो उसने अधिकारों को परिभाषित करते हुए कहा कि वे अत्यधिक महत्वपूर्ण उपयोगिताओं के सिवाय कुछ नहीं है। हम जानते है कि मिल के पिता जेम्स मिल उपयोगितावाद के संस्थापक जेरेमी बेंथम के घनिष्ठतम मित्र थे। जॉन स्टुअर्ट मिल उपयोगितावाद की छाया में पले बढ़े और यहां तक कि अपने जीवन में बीस के दशक के आरंभ में अपने भावात्मक संकट के बाद उसने उपयोगितावाद के समर्थन में लिखा। अपने संपूर्ण लेखन कार्य में हमने उसने उपयोगिता के मानक को लागू करते हुए देखा। महिलाओं के समानता प्रदान करने का एक कारण ~~यह~~ यह था कि इससे उसकी प्रसन्नता की वृद्धि होगी। उसने, ~~उसक~~ इसकी समाजिक उपयोगिता के आधार पर स्वतंत्रता के सिद्धांत को

समर्थन किया — क्योंकि वैयक्तिक स्वतंत्रता पर ही सामाजिक प्रगति निर्भर करती है। इसकी उपयोगिता के कारण उसने संशोधित उदारवादी लोकतंत्र को सबसे उत्तम प्रकार की सरकार बताया गया। मिल ने युटिलिटेरियनिज्म (1862) नामक छोटी सी पुस्तिका में इस दर्शन के विरुद्ध उठाए गए सभी आक्षेपों का उत्तर दिया। मिल ने इस पुस्तिका का आरंभ इस बात की ओर संकेत करते हुए किया है कि व्यक्तियों से क्या चीज सही है और क्या गलत है इस बात में अन्तर करने की कसौटी तय करने पर कोई समझौता नहीं हो सका। मिल ने इस बात को अस्वीकार किया कि मनुष्य के पास देखने और सुनने की समझ की नैतिक समझ भी होती है जिसके द्वारा यह पता चल सकता है कि कुछ नियत मामलों में क्या सही है। मिल ने नैतिकता के आधार के रूप में उपयोगिता की कसौटी का या सर्वाधिक खुशी के सिद्धांत को प्रस्तुत किया। वह कार्य नैतिक है जो प्रसन्नता की मात्रा को बढ़ाने या पीड़ा को दूर करने वाला हो। यहां उपयोगितावाद के पक्ष का समर्थन करते हुए मिल ने बेंथम की स्थिति से महत्वपूर्ण परिवर्तन किया।